पाठ 1

जय जवान, जय किसान

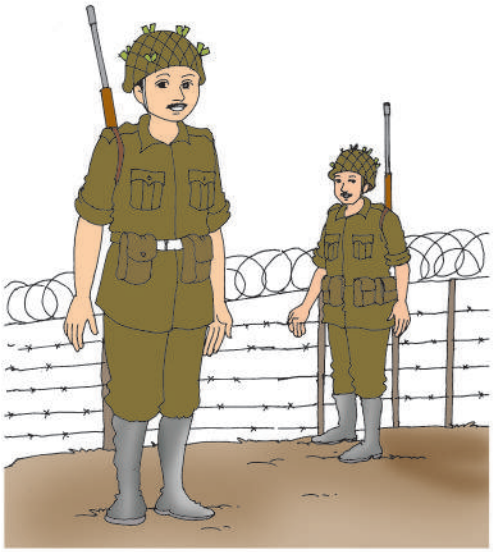

मरे जो देश के लिए, प्रणाम उस जवान को,
जिए जो देश के लिए, प्रणाम उस किसान को।
जय जवान, जय किसान।

झुका नहीं सकीं जिसे, प्रलय मचाती टोलियाँ,
डरा नहीं सकीं जिसे, वे दनदनाती गोलियाँ।
वतन पर हँस के वार दे, जवान अपनी जान को,
मरे जो देश के लिए, प्रणाम उस जवान को।
जय जवान, जय किसान।

धरा उगल रही है स्वर्ण, जिसके श्रम प्रताप से,
सनाथ पुण्य भूमि है, किसान के कलाप से,
भुला सकेगा कौन भला, मौन रक्तदान को,
जिए जो देश के लिए, प्रणाम उस किसान को।
जय जवान, जय किसान।

पराक्रमी जवान मातृ–भू की शान–बान है,
परिश्रमी किसान से यह देश भाग्यवान है।
त्यागी, तपस्वी धीर–वीर आत्मा महान को,
प्रणाम रम्य भूमि के जवान को, किसान को।
जय जवान, जय किसान।

मरे जो देश के लिए, प्रणाम उस जवान को,
जिए जो देश के लिए, प्रणाम उस किसान को।
जय जवान, जय किसान।

अभ्यास

1. आइए, शब्दों के अर्थ जानें –

- तपस्वी – तपस्या करने वाला
- धरा – धरती
- पराक्रमी – वीर
- परिश्रमी – मेहनती
- पुण्य – पावन
- प्रणाम – नमस्कार
- प्रताप – महिमा, प्रभाव
- प्रलय – विनाश
- मौन – चुप रहना
- वतन – जन्मभूमि / देश
- श्रम – मेहनत
- सनाथ – जिसका कोई स्वामी हो
- रम्य – सुंदर

2. कविता से –

(क) कविता में किस–किस को प्रणाम करने की बात कही गई है ?

_____

_____

(ख) किसान अपने देश के लिए किस प्रकार योगदान देता है ?

_____

_____

(ग) कविता में जवान को प्रणाम करने की बात क्यों कही गई है ?

_____

(घ) **'सनाथ पुण्य भूमि है, किसान के कलाप से.....**
प्रणाम रम्य भूमि के जवान को, किसान को।'
भूमि को पुण्य और रम्य क्यों कहा गया है ?

(ङ) कविता में महान आत्मा किसे और क्यों कहा गया है ?

(च) देश के लिए जीने से क्या अभिप्राय है?

3. आपकी बात –

(क) आप देश के लिए क्या–क्या कार्य कर सकते हैं?

(ख) जवान और किसान के अतिरिक्त आप किस–किस को प्रणाम करते हैं?

4. पाठ से आगे –

(क) आपने अपने देश के बारे में कोई कविता सुनी या पढ़ी होगी। उस कविता की कुछ पंक्तियाँ लिखें–

(ख) 'जय जवान, जय किसान' कविता में जवान और किसान का जिक्र किया गया है। जवान देश की रक्षा करते हैं और किसान अनाज पैदा करते हैं। आपके आस–पड़ोस में और किस–किस प्रकार का काम करने वाले लोग रहते हैं? चर्चा करें।

(ग) अपने साथियों या अध्यापक के साथ 'रक्तदान के बारे में चर्चा करें।

5. आइए आवाज पहचानें–

(क) 'डरा नहीं सकीं जिसे, वे दनदनाती गोलियाँ, गोलियों की आवाज को दनदनाना कहते हैं।

इनकी आवाज को क्या कहते हैं?

गोलियाँ चलने की आवाज	–	दन–दन	दनदनाना
पत्तों की आवाज	–	मर्मर	मर्मराना
बादल के गरजने की आवाज	–	————————	————————
पक्षी के पंखों की आवाज	–	————————	————————
घोड़े की आवाज	–	————————	————————
मेंढक की आवाज	–	————————	————————
मक्खी की आवाज	–	————————	————————

(ख) पराक्रमी जवान मातृ–भू की शान–बान हैं,
परिश्रमी किसान से यह देश भाग्यवान है।

इन वाक्यों में 'पराक्रमी' शब्द जवान के लिए और 'परिश्रमी' शब्द किसान के लिए आए हैं। ध्यान से कविता पढ़ें व लिखें कि जवान और किसान के लिए और किन–किन शब्दों का इस्तेमाल किया गया है?

जवान
————————
————————

किसान
————————
————————

————————	————————
————————	————————
————————	————————
————————	————————

6. भाषा की बात –

- **ऋ और र**

पराक्रमी जवान मातृ–भू की शान–बान है,
मात्र मेरा तन नहीं सर्वस्व ही कुर्बान है।

पहले वाक्य में 'मातृ' शब्द आया है। इस शब्द में 'तृ' **त्** और **ऋ** से मिलकर बना है।

दूसरे वाक्य में 'मात्र' शब्द में 'त्र' **त्** और **र** से मिलकर बना है। आप भी कुछ शब्द लिखिए जो 'तृ' और 'त्र' से बने हैं।

'तृ' वाले शब्द	'त्र' वाले शब्द
————————	————————
————————	————————
————————	————————
————————	————————
————————	————————
————————	————————

पाठ
2 बड़ा

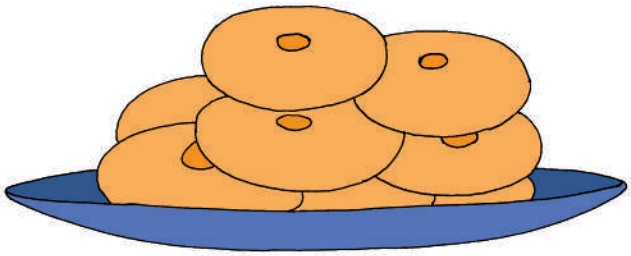

मैं बड़ा हूँ। आपने मेरा नाम सुना होगा। कभी–न–कभी मेरा स्वाद भी अवश्य लिया होगा। दुनिया मुझे जानती–मानती है। चटखारे ले–लेकर मेरा स्वाद लेती है। सच, मेरे लिए उसकी लार टपकती रहती है।

'बड़ा' नाम मुझे कैसे मिला–आप जानना चाहेंगे। यूँ ही बड़ा नहीं बन गया मैं। इसके लिए मुझे बड़े पापड़ बेलने पड़े। भाँति–भाँति के कष्ट–कसाले झेलने पड़े। तब कहीं जाकर 'बड़ा' पद प्राप्त हुआ। आप समझ रहे होंगे–कोरा नून–मिर्च लगाकर ही मैं बड़ा बन गया हूँ। कृपया, इस भुलावे में न रहना। खालाजी का घर नहीं है बड़ा बनना। एक नंबर की टेढ़ी खीर है यह। तनिक मेरी रामकहानी सुनिए। सब समझ में आ जाएगा।

मेरे पूर्व रूप से तो आप परिचित ही होंगे। अरहर, उड़द, मूँग, मोठ आदि अन्न मेरे पूर्व रूप हैं। इन अन्नों को हथचक्की, पनचक्की, तेल–चक्की अथवा विद्युत–चक्की में दलकर दाल बनाई जाती है। चक्की के दो पाटों की रगड़ खाकर दाल बनने में जो मजा आता है, उसे आप नहीं जान सकते। हाँ, दो पाटों के बीच में आप को भी पड़ना पड़ जाए, तो और बात है। कभी पड़े हैं आप?–बोलिए! पड़े होते तो मुझ पर क्या बीतती है, अच्छी तरह महसूस कर सकते।

विशेष रूप से मैं उड़द की दाल का बनाया जाता हूँ। दाल को पूरी–पूरी रात पानी में भिगोकर रखा जाता है। गरमी में तो खैर कोई बात नहीं, लेकिन कहीं जाड़े का हुआ तो बस सी–सी करते, जान पर आ बनती है। जमनाजी में जाड़े की रात में रात–भर डुबकी मारे रहना पड़े आपको, तो आप समझ जाएँगे कि मुझ पर क्या बीतती है?

इसके बाद मुझ पर से छिलका उतारा जाता है। छिलका उतारा जाना किसको

अच्छा लगेगा? अजी, आँख पसार दें, मुँह बा दें बड़े–बड़े शेर के बच्चे पर मैं तो वीरों का वीर बना, धैर्यपूर्वक यह सब सहन करता ही हूँ। आखिर बड़ा बनना जो ठहरा।

इसके पीछे सिल–लोढ़े से मेरी खूब पिसाई होती है। मेरे कण–कण का चूरा कर दिया जाता है। दबाव और रगड़ झेलते–झेलते मेरा दम निकलने को हो जाता है। इतना सब होने पर मैं 'पिट्ठी' नाम पाता हूँ। पिट्ठी बनने पर भी मेरा पीछा नहीं छोड़ा जाता। हाथों से खूब मथ–मथ कर मेरा दम निकाला जाता है।

इतने पर भी बस नहीं। सबसे बढ़कर तो मेरी परीक्षा तब ली जाती है, जब चूल्हा दहकाकर कड़ाही में तेल अथवा घी छोड़ा जाता है।

जब वह खौलने लगता है, तो मुझे हाथ से गोल–गोल बनाकर हथेली से थेप–थेपकर मुझमें चिपटापन लाकर, कभी–कभी मुझमें किशमिश, काली मिर्च, गोला, गिरियाँ आदि भी भरकर उस खौलते तेल में छोड़ दिया जाता है। सच जानना, एकदम छौंक–सा लग जाता है मेरे में! और इसके बाद तुरंत ही मुझे निकाल भी तो नहीं लिया जाता। निकालना तो दूर, जी भरकर उसमें रखकर उलटे खूब लाल किया जाता है मुझे। कोंच–कोंचकर देखा जाता है कि मैं अच्छी तरह सिक गया हूँ कि नहीं। अब मेरे सिकने के बारे में पूरी दिलजमई कर ली जाती है, तब कहीं मुझे बाहर निकाला जाता है। अब आप ही राम–लगती कहिए–है कोई, जो इतना कुछ झेले बड़ा बनने के लिए?

बाहर निकालकर भी मुझे चैन नहीं लेने दिया जाता है। पिट्ठी में तो मसाले की भरमार की गई होती है, अब ऊपर से नून–मिर्च और छिड़क दिया जाता है मुझ पर। 'जले पर नून' इसी को कहते हैं।

बस इस तरह, इतना सब होकर मैं 'बड़ा' नाम पाता हूँ। प्लेटों में सजकर अचार–चटनी के साथ स्वाद देता हूँ। कभी–कभी पानी में भिगो, मुझे कुछ ठंडा कर, दही–सोंठ के साथ भी मेरा जायका लिया जाता है। किसी भी तरह कोई मेरा मजा ले, मुझे इनकार नहीं होता।

बस, यही है मेरी रामकहानी। हाँ, मैं बड़ा हूँ। आपने मेरा नाम सुना होगा। कभी–न–कभी मेरा स्वाद भी अवश्य लिया होगा। दुनिया मुझे जानती–मानती है। चटखारे ले–लेकर, मेरा स्वाद लेती है। सच, मेरे लिए उसकी लार टपकती रहती है।

–हरिकृष्णदास गुप्त 'हरि'

अभ्यास

1. आइए, शब्दों के अर्थ जानें –

- कोच– कोचकर – कड़छी चुभाकर देखना
- चटखारे लेना – मजे से खाना
- जायका – स्वाद
- झेलना – सहना
- दहकाकर – जलाकर
- दिलजमई – तसल्ली
- धैर्यपूर्वक – धीरज के साथ
- पापड़ बेलना – कष्ट सहना
- रकाबियों – तश्तरी, छोटी छिछली थाली

2. पाठ से –

(क) बड़े बनाने के लिए पिट्ठी किस प्रकार बनाई जाती है?

(ख) बड़ा किस–किस चीज के साथ खाने से स्वादिष्ट लगता है?

(ग) खाला जी का घर नहीं है बड़ा बनना' इस वाक्य में बड़ा बनने से क्या अभिप्राय है?

(घ) 'टेढ़ी खीर' का मतलब है कठिन कार्य। बड़ा बनना टेढ़ी खीर क्यों है?

(ङ) 'बड़े' को स्वादिष्ट बनाने के लिए उसमें क्या–क्या मिलाया जाता है?

(च) विशेष रूप से मैं उड़द की दाल का बनाया जाता हूँ। ज्यादातर 'बड़ा' उड़द की दाल से ही क्यों बनाया जाता है?

3. आपकी बात –

(क) क्या आपके घर में भी कभी बड़े बनाए गए हैं यदि हाँ तो कब?

(ख) कभी–कभी मुझ में किशमिश, गोला, गिरियाँ आदि भी भरी जाती हैं। आपके घर में कौन–कौन से व्यंजनों में ये डाली जाती हैं ?

(ग) जब मेरे सिकने के बारे में पूरी दिलजमई कर ली जाती है, तब कहीं मुझे

बाहर निकाला जाता है? इस वाक्य में दिलजमई का अर्थ है–तसल्ली। आपको कौन–कौन से काम करने के बाद तसल्ली होती है?

(घ) अन्न को हथचक्की, पनचक्की, तेलचक्की अथवा विद्युत चक्की में दलकर दाल बनाई जाती है। इस वाक्य में अनेक प्रकार की चक्कियों की बात की गई है। आप किस प्रकार की चक्की से गेहूँ पिसवाते हैं?

(ङ) 'यूँ ही बड़ा नहीं बन गया मैं।' इसके लिए मुझे पापड़ बेलने पड़े। आप बड़ा यानी अच्छा आदमी बनने के लिए क्या–क्या काम करेंगे?

4. पाठ से आगे –

(क) मिर्च ही मिर्च–

कभी–कभी मुझमें किशमिश, काली मिर्च, गोला, गिरियाँ आदि भी भरी जाती है। इस वाक्य में 'काली मिर्च' से हमें मिर्च की विशेषता का पता चलता है कि वह 'काली' है। मिर्च और कैसी हो सकती है लिखें–

———————— मिर्च ———————— मिर्च

———————— मिर्च ———————— मिर्च

———————— मिर्च ———————— मिर्च

———————— मिर्च ———————— मिर्च

(ख) पहले हमारे घरों में बिजली नहीं होती थी। तब हम अनाज किस प्रकार की चक्की में पिसवाते थे? आज हम अनाज कहाँ व कैसे पिसवाते हैं। चर्चा करें और बताएँ।

5. भाषा की बात –

(क) अनुनासिक को भी समझें बताएँ–

'अरहर, उड़द, मूँग, मोठ आदि मेरे पूर्व रूप हैं।' इस वाक्य में 'मूँग' शब्द में चंद्रबिंदु का प्रयोग हुआ है। पाठ से ऐसे शब्द छाँटकर लिखिए, जिनमें चंद्रबिंदु का प्रयोग हुआ है–

———————— ———————— ———————— ————————

———————— ———————— ———————— ————————

———————— ———————— ———————— ————————

(ख) चक्की ही चक्की–

इन अन्न को हथचक्की, पनचक्की, तेलचक्की अथवा विद्युतचक्की में दल कर दाल बनाई जाती है।

हाथ से चलाई जाने वाली चक्की को हथचक्की कहते हैं।

बताएँ कि इन चक्कियों का यह नाम क्यों पड़ा?

पनचक्की – ————————————————————

तेल–चक्की – ————————————————————

विद्युत–चक्की – ————————————————————

(ग) पर मैं तो वीरों का वीर बना, धैर्यपूर्वक यह सब सहन करता हूँ।

इस वाक्य में कहा गया है कि बड़ा 'वीर' है। वीरता बड़े की विशेषता है। नीचे कुछ विशेषताएँ दी गई हैं। निम्नलिखित में से आपमें कौन सी विशेषताएँ हैं ?

बहादुर –	बुद्धिमान	चालाक	मेहनती
सहयोगी	सुंदर	ईमानदार	बेईमान
होशियार	आज्ञाकारी	नटखट	हँसमुख

(घ) दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाएँ–

– खाला जी का घर ————————

– जले पर नमक छिड़कना ————————

– पापड़ बेलना ————————

– लार टपकना ————————

– टेढ़ी खीर ————————

– दो पाटों के बीच पिसना ————————

– दम निकलना ————————

– घबरा जाना ————————

पाठ 3

शेर और चित्रकार

चित्रकार सुनसान जगह में बना रहा था चित्र,
इतने में ही वहाँ आ गया यमराज का मित्र।
उसे देखकर चित्रकार के तुरंत उड़ गए होश,
नदी, पहाड़, पेड़–पत्तों का रह गया न कुछ जोश।
फिर उसको कुछ हिम्मत आई, देख उसे चुपचाप,
बोला–सुंदर चित्र बना दूँ, बैठ जाइए आप।
उकड़ू–मकड़ू बैठ गया वह सारे अंग बटोर,
बड़े ध्यान से लगा देखने चित्रकार की ओर।
चित्रकार ने कहा–हो गया आगे का तैयार,

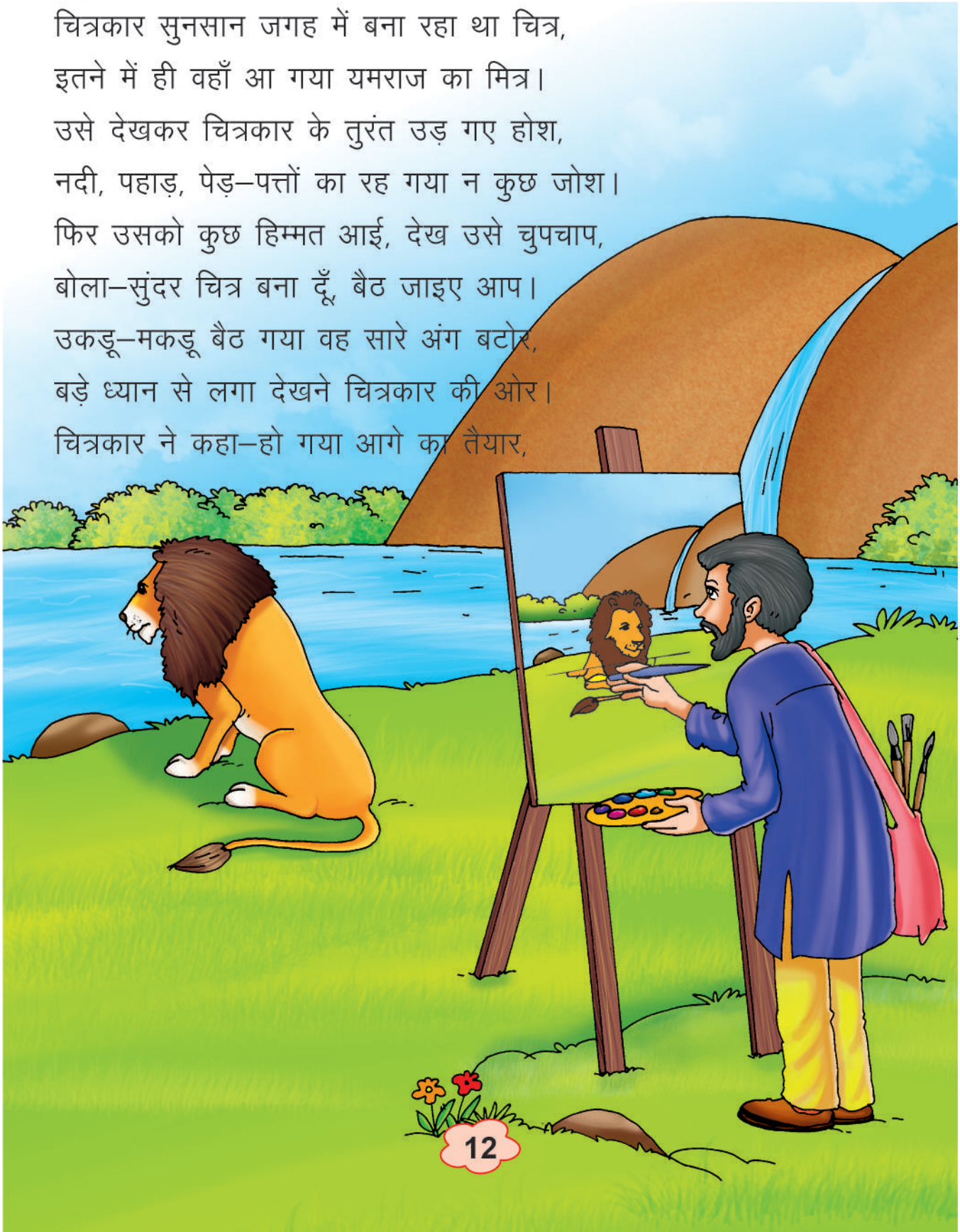

अब मुँह आप उधर तो करिए जंगल के सरदार।
बैठ गया वह पीठ फिराकर चित्रकार की ओर,
चित्रकार चुपके से खिसका जैसे कोई चोर।
बहुत देर तक आँख मूँदकर, पीठ घुमाकर शेर,
बैठे–बैठे लगा सोचने इधर हुई क्यों देर?

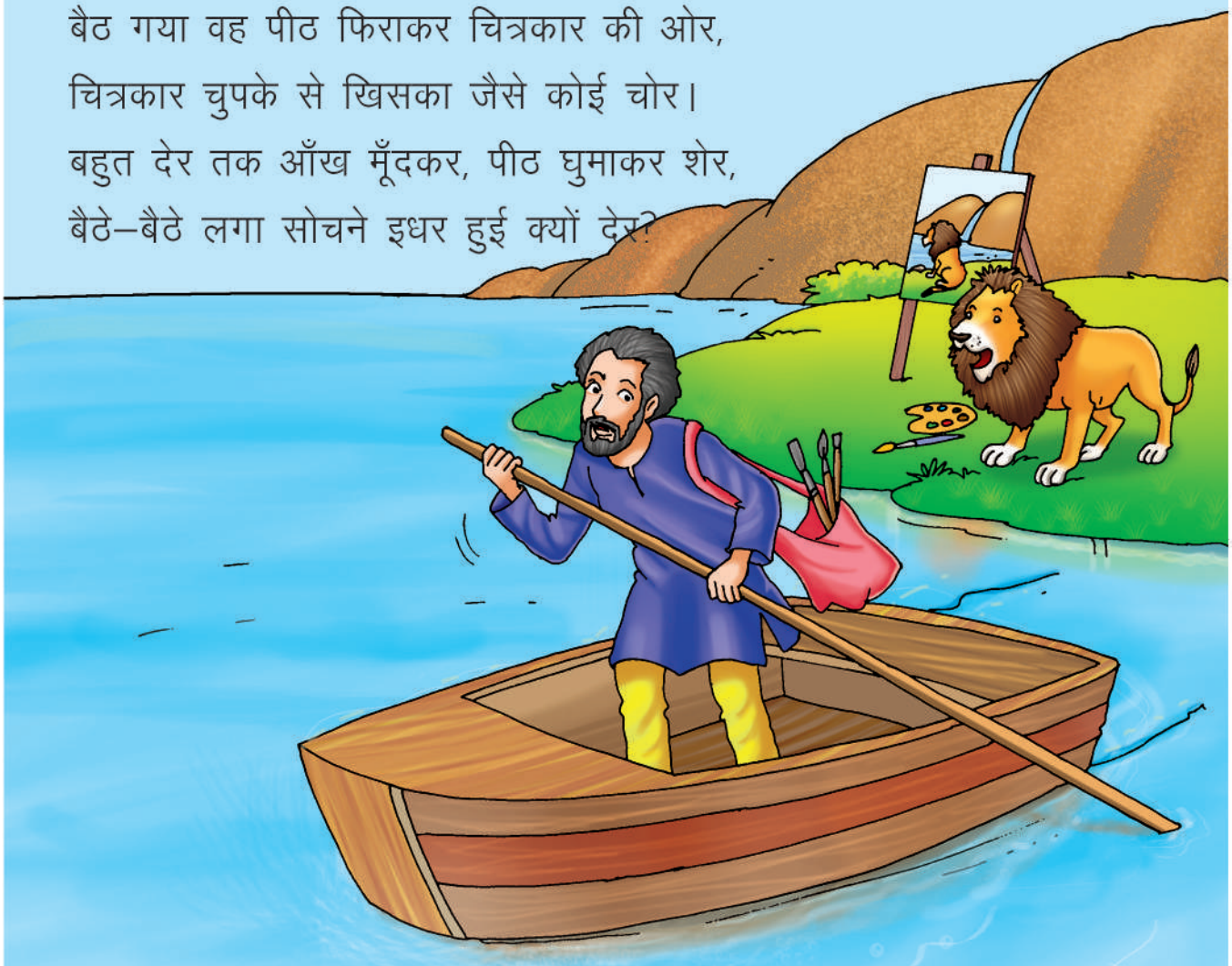

झील किनारे नाव लगी थी, एक लगा था बाँस,
चित्रकार ने नाव पकड़ ली, जी भर कर के साँस।
जल्दी–जल्दी नाव चलाकर, निकल गया कुछ दूर,
इधर शेर था धोखा खाकर झुँझलाहट में चूर।
शेर बहुत खिसियाकर बोला–नाव जरा ले रोक,
कलम और कागज तो ले जा रे कायर डरपोक।
चित्रकार ने कहा तुरंत ही–रखिए अपने पास,
चित्रकला का आप कीजिए जंगल में अभ्यास।

–रामनरेश त्रिपाठी

अभ्यास

1. आइए, शब्दों के अर्थ जानें –

- उकड़ू–मकड़ू – घुटने मोड़कर
- कायर – डरपोक
- खिसका – भाग गया
- खिसियाकर – क्रोधित होकर
- चित्रकार – चित्र बनाने वाला
- झुँझलाहट – खीज , चिढ़
- यमराज – मृत्यु का देवता

2. कविता से –

(क) शेर के आने से पहले चित्रकार जंगल में क्या कर रहा था ?

_____

_____

(ख) चित्रकार ने शेर से बचने के लिए क्या उपाय किया ?

_____

_____

(ग) चित्रकार को नाव पर बैठा देखकर शेर ने उससे कागज–कलम ले जाने के लिए क्यों कहा ?

_____

_____

(घ) शेर को यमराज का मित्र' क्यों माना गया है ?

_____

_____

(ङ) "आप मुँह उधर तो करिए" चित्रकार ने शेर को किधर मुँह करने के लिए कहा था ?

_____

_____

3. आपकी बात –

(क) चित्रकार अपनी चतुराई से बच गया था। चित्रकार की जगह यदि आप होते तो बचने के लिए क्या करते?

(ख) चित्रकार ने शेर को 'जंगल का सरदार' कहा था। आप चित्रकार की जगह होते तो शेर को क्या कहकर पुकारते?

(ग) चित्रकार ने नाव पर चढ़कर जी भरकर साँस ली। आप किन–किन अवसरों पर गहरी साँस लेते हैं?

4. पाठ से आगे –

(क) शेर चित्रकार के कहने पर पीठ घुमाकर बैठ गया। बताएँ, वह बैठे–बैठे क्या सोच रहा होगा ?

(ख) यदि शेर के बुलाने पर चित्रकार अपना सामान लेने वापस आता तो क्या होता?

(ग) यदि झील के किनारे नाव नहीं होती तो चित्रकार अपनी जान कैसे बचाता ?

(घ) शेर को उसके घर तक पहुँचाएँ

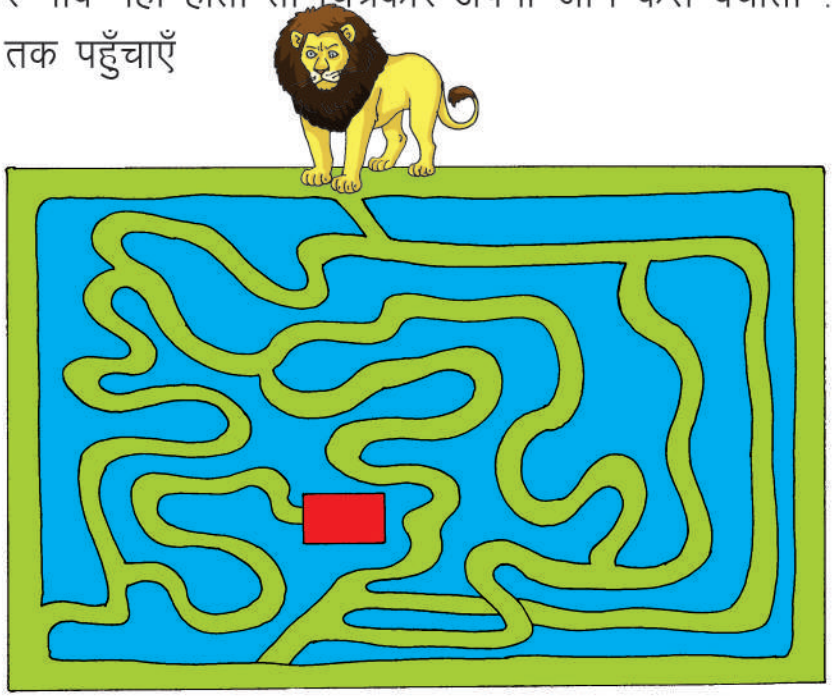

5. भाषा की बात –

(क) 'होश उड़ना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है घबरा जाना। 'घबरा जाना' को बताने के लिए कई और मुहावरे हैं जैसे –

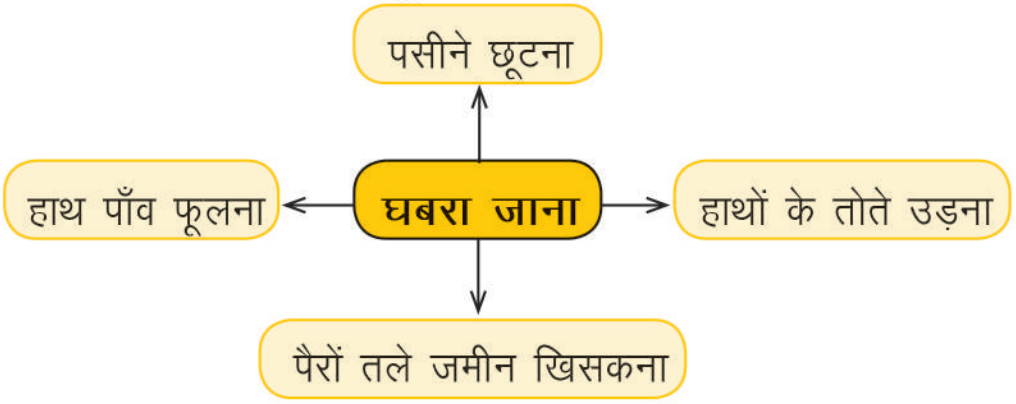

आप इन मुहावरों का प्रयोग करते हुए 1 – 1 वाक्य बनाएँ।

_____

_____

_____

_____

(ख) चित्रकार सुनसान जगह में बना रहा था चित्र
कविता की इस पंक्ति को गद्य में इस तरह लिखा जाता है–
चित्रकार सुनसान जगह में चित्र बना रहा था।
आप भी इन पंक्तियों को गद्य में लिखें –

- इतने में ही वहाँ आ गया, यमराज का मित्र
  _____
- झील किनारे नाव लगी थी, एक रखा था बाँस
  _____

(ग) चित्र बनाने वाले को कहते हैं 'चित्रकार' तो बताएँ इन्हें क्या कहेंगे ?
गीत गाने वाला _____

कविता लिखने वाला _____

कहानी लिखने वाला _____

निबंध लिखने वाला _____

मूर्ति बनाने वाला _____

अभिनय करने वाला _____

(घ) **चित्र को देखकर कहानी को पूरा करें–**

एक जंगल में एक शेर रहता था। एक बार शिकारियों ने उसे पकड़ने के लिए जाल बिछाया और वह जाल में फँस गया।

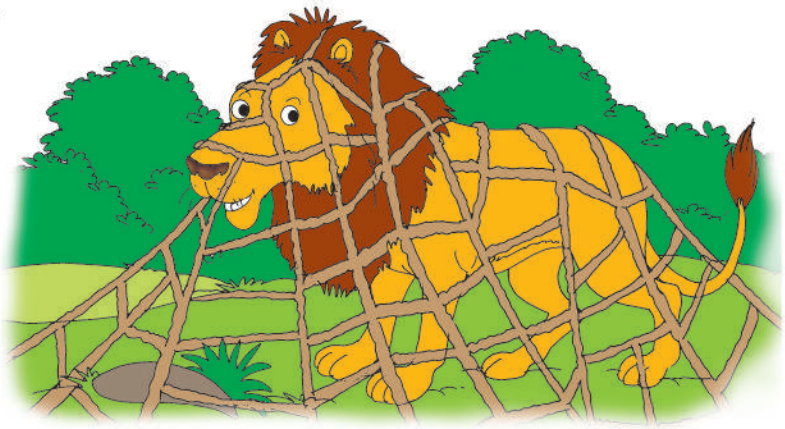

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____